उजरा परवाक खोज

बिनय भूषण

OPPO F7

उजरा परवाक खोज

विनय भूषण

भोरुकवा पब्लिकेशन
कोलकाता

प्रकाशक :
भोरुकाबा पब्लिकेशन
20, मल्लिक स्ट्रीट
पोद्दार तल्ला, कोलकाता - 700 007
मो. : 9903893108
Email : bhorukaba@yahoo.com

© कंचनमाला

प्रथम प्रकाश - 2015

दाम : 150 टका

आवरण एवं मुद्रण :
लखनपति झा
69, बड़तल्ला स्ट्रीट, बड़ाबजार
कोलकाता - 700 007
मो. : 09748120990, 09883072050
Email : lakhanjha@hotmail.com

OPPO F7

काव्य-क्रम

मिझाऽ दियौ	13
ओ एबनौमंल अछि	16
कविताक प्रार्थना	19
रुआंडा : एकटा शब्द चित्र	20
मणिपद्म	21
तरुआरि	22
ग्रिहनिक सपना	24
ओ बड़ दुःखी अछि	26
नोर आ पियास	28
दस टा आंगुर दस टा ओंठी	30
एहि कठिन समय मे	31
चिड़ै आ कवि	32
परिवर्तन	33
हमरा लाज होइत अछि	35
स्वप्नक हत्या	36
गिद्धक कायान्तरण	37
आदमी आ शब्द	38
विनिमय	39
कविता आत्मा मे नञि नुकाइत अछि	40
परम्परा	43
कवितांक दोकान	44
पता नञि	46
षड्यंत्र	47
आदमीक आकारक नव मानदण्ड	49
सहजताक मर्म	51
कविताक चंतोनी	53
निर्लज्ज	55

आवागमन	56
सहानुभूतिक गणित	57
सत्य अछि प्रेम	59
गिद्ध	62
गामक कवि मित्रक नाम एकटा कविता	64
थपड़ी मारऽ	68
उजरा परवाक खोज	70
अहाँ हमर भाई छी	74
डंकल	79
हर्षहन्ता	80
सम्पर्क	81
टेलीफोन पर माँ	83
एक गोट शुभचिन्तकक वक्तव्य	85
कविताक दर्द	87
सहस्त्राब्दीक शेष : एकटा प्रेम कविता	88
उनटा बसात	93
चेतौनी	95
बबुआनीक गणित	100
गुरु-पर्व	103
कंचनमालाक कविता पढ़ैत	108
आतंकक कारी मेघ	110
माँक ब्रह्मवाक्य	112
ओना बूझल होयत	113
कविता लेखन बन्न करु	116
अहाँ जे देखि रहल छी	119

OPPO F7

भूमिका

विनय भूषणक कविता-संग्रह प्रकाशित भऽ रहल छनि, ई बात मैथिली कविताक लेल अत्यन्त हर्षक विषय थिक। मुदा, व्यक्तिगत रूप सँ हमरा लेल तँ ई आरो उत्फुल्ल हेबाक विषय थिक।

पछिला दू दशक सँ हम विनय के कविता संग आ हुनक कविक संग जुड़ल रहल छी। कविक जुड़ाव होइ छै ओकर स्वर साम्यक कारण। हम जे काज पछिला तमाम समय सँ मैथिली कविता मे करैत रहल छी, विनय सेहो वैह काज करैत रहलाह अछि। मोन पड़ैए जे एक बेर हम बाबूजी के, जखन ओ अपन जीवनक नितान्त अन्तिम समय मे जीवि रहल छला मुदा पूर्ववत जाग्रत आ ज्वलन्त छला, पुछने रहियनि - 'बाबा कखनहु एहन नहि लगैए जे किछु जरूरी चीज लिखब छुटि -रहल अछि? शारीरिक रूप सँ किछु आर ठीक रहितहुँ तँ जरूर लिखितहुँ, मुदा लिखि नहि सकलहुँ!' आ, एहि प्रश्नक उत्तर जाहि शब्द मे बाबूजी हमरा देने छला से, स्वर्णाक्षर मे लिखबा-जोग अछि। ओ कहने छला - 'नहि नहि तारा बाबू, एकदम्म नहि होइए। लगैए जे अहाँ सब जे लिखि रहल छी से की लिखि रहल छी? हमरे बात लिखि रहल छी कि ने! हमरा तँ होइए जे सहस्रबाहु भ' गेल छी हम। अहाँ नवतुरिया सभ के जे ई दु-दू टा हाथ अछि, होइए जे ई हमरे हाथ छी।' एकरा गुरु-कृपा कहल जाय जे विनय भूषण आ हुनका सँ स्वर-साम्य, मुदा कता-वेभिन्यो रखैत, युग्मा लोकनि मे सदति निजता-बोध होइत रहैए।

विनय के कविता-संग्रह सँ विशेष उत्फुल्ल हेबाक एक प्रसंग तँ ई जे हुनका संग हमर निजता-बोध जुड़ल अछि, दोसर जे विनय के गाम हमर मातृक। हमर मायक जन्म स्थान। माय हमर एहन जे कदाचित लोक एहन भाग्यशाली होइत हेताह, जिनका ओहि विराट स्तरक स्त्रीक पुत्र हेबाक अवसर भेटैत हेतनि। हमर मायक निधन के पन्द्रह बरस सँ ऊपर भेल मुदा एखनहु जे कोनो नीक काज जीवन मे करै छी तँ होइए जे हुनके प्रीत्यर्थ क' रहल छी। आ, विनय के गाम द' क' बनल सड़क सँ जखन गुजरै छी, आ से गुजरिते रहै छी, कहियो एहन नहि भेल अछि जे गाम दिस हाथ जोड़ि क' आँखि मुनि क' हम प्रणाम निवेदित नहि केने होइ। क्षमा करब, ई नितान्त व्यक्तिगत बात हम खोलि देल। मुदा करी की, हम विनय के जीवनक एक महत्वपूर्ण अवसर पर अपन उद्गार प्रकट क' रहल छी।

मैथिली कविताक एक विराट परम्परा छै आ जतेक काज एहि क्षेत्र मे एखन धरि भेलैए, हम मानै छी जे आजुक समय मे ई मैथिल -आइडेन्टिटी के एक अनिवार्य तत्त्व थिक। जे लोकनि कविता - परम्परा सँ साफे अनवगत छथि, ओहो कवि विद्यापति के अपन पहचान मानै छथि। ताहि सँ जँ कने बेसी बुझनुक छथि ओ चन्दा झा धरि एता।

OPPO F7

ताहू सँ कनें बेसी बुझनिहार सुमन जी धरि पहुँचता। मुदा, किछु बात छै एहि माटि मे जे ई धारा रुकबाक नाम नहि ल' रहल अछि। एहनो बुझनुक के कमी नहि, अछि जे राजकमल चौधरी, कुलानन्द मिश्र सँ होइत विनय भूषण धरि कोना हमर अस्मिता, हमर स्मृति के अभिन्न अंग छथि, एहि बात के नीक जकाँ परेखि सकैत छथि। हमरा खुशी अछि जे मैथिली कविताक एहि ताकत के आइ अन्यत्रो, देश-दुनिआ मे पहचान कायम भ' रहल छै।

आधुनिक मैथिली कविताक परम्परा मे हमरा लोकनि दू तरहक कवि कें, कविता के आरंभिके समय सँ देखैत छी। एक एहन कवि जे अनुभूति - प्रधान कविता लिखैत छथि, एहन कवि कें कहि सकैत छियनि - भावुक कवि। हिनका लेल काव्य-भूमिक समाजाधिक परिप्रेक्ष्य के कोनो अर्थ नहि। हिनका लेल दुनिआक आन समस्या, आन संकट, आन मुद्दा, आन भाषा आ साहित्यक कोनो मूल्य नहि । ई लोकनि 'जय मिथिला जय मिथिला' करता, मुदा मिथिला किए शिथिला बनल छथि आ कोना हिनक शिथिलता मेटैतैक, तकर गहराइ मे जेबाक ने हिनका अवगति आ ने इच्छाशक्ति। एहन कवि अपना कें राजनीतिक दृष्टि सँ निष्पक्ष बतेता। राजनीतिक निष्पक्षताक अर्थ थिक प्रतिगामी आ जनविरोधी शक्तिक समर्थन करब, एहि बातक मर्म कें बुझबाक सामर्थ्य एहि भावुक कवि लोकनि मे नहि होइत छनि। मिथिलाक माटि-पानि एहन छैक जे विद्यावान आ कलावान लोकक उत्पत्ति बहुसंख्या मे एतय होइत एलैए आ भ' रहल छै। मुदा, मिथिलाक समाज एक गतिहत आ बन्द समाज रहल अछि। एहना स्थिति मे एहि विद्यावान आ कलावान लोक सभ कें जे बौद्धिक आ वैचारिक प्रशिक्षण चाही, दीन-दुनिआ कें देखबाक जे एक मार्मिक दृष्टि चाही, हमरा लोकनि सभ दिन सँ एहि मे हुसैत रहल छी।

मुदा, मैथिली कविताक आधुनिक युग मे दोसरो तरहक कवि होइत रहलाह अछि, जिनका अहाँ अनुभव -प्रधान कवि कहि सकैत छियनि। बौद्धिक रूप सँ जाग्रत, वैचारिक रूप सँ सजग, दीन-दुनिआ सँ वाकिफ, अपन रोग कें आ ओकर इलाज कें चिन्हबा मे समर्थ। कहब आवश्यक नहि जे एहने कवि लोकनिक बल, पर मैथिली कविता आइ अपन पहचान कायम कऽ सकल अछि। हमर ई कवि, विनय भूषण, एहने तरहक कवि छथि। हिनका लेल कविता लिखब कखनहु भावुकता मे बहि कऽ आनन्ददायी प्रलाप करब नहि थिक। ओ भाषाक मर्म कें बुझैत छथि, आ जनैत छथि जे भाषाक द्वारा कोना कोनो प्रतिरोध कएल जा सकैत अछि आ कोन तरहें जनपक्षधर शक्तिक संगोर कएल जा सकैत अछि।

विनय भूषणक कविता-विषय बहुत व्यापक, अत्यन्त सुविस्तृत छनि। मिथिलाक गामघर, घर-चौबर, आस्था-विश्वास, राग-विराग, परिदृश्यक कतबाहि मे जिबैत लोकक

संघर्ष, ओकर मनोनिर्मित सभ कथू बहुत आपकलाक रंग हुनकर कविता मे आएल अछि। से एक दिस। दोसर दिस, अपन एहि प्रिय देश भारतक स्थिति-परिस्थिति, जनसरोकार सँ कटल राजनीति, पूँजीपति-वर्गक हाथ मे शोषक हथियारण, आमजन प्रति घोषणा जाइत कूटनी - ई सभ हुनकर कविताक विषय बनल अछि। मुदा एतबे नहि, आफ्रीकी देश सभ आ कि दुनियाक आनो भाग मे हवल-पेट्टाएल लोकक जीवन-संघर्ष, दबाएल-सताएल लोकक चिन्ता, लुप्त होइत संवेदना, मेटल जाइत जन-संस्कृति, संवेदनशील लोकक चिन्ता - ई सभ सेहो हुनक काव्य-निर्मिति मे पर्याप्त स्पेस पौलक अछि। ओ परम्परा पर कविता लिखैत छथि। कहैत छथि जे *हे परम्परा, अहाँ प्रणम्य छी, प्रकाशपुंज छी जे हमरा आगू पसरल अन्हार के विलीन कऽ सकै अछि। अहाँ हमरा आगूक बाट देखा सकै छी।* मुदा, विडंबनाक परिस्थिति देखबैत आगू ओ इहो कहैत छथि जे *'हे परम्परा, एतं संभावना सभक अछैत अहाँ स्वयं रूढ़ि मे परिणत भऽ गेल छी, प्रवाह अहाँक समाप्त भऽ गेल अछि। तैं, अहाँ कें हम नेस्तनाबूद करब।* एहि ठाम एहि कविक आलोचनात्मक विवेक कें देखल जा सकैत अछि। मोन पड़ै छथि हमरा *ओरहान पामुक*, नोबेल-पुरस्कृत साहित्यकार, जिनका अपन देश सँ, अपन परम्परा सँ एतेक बेसी प्रेम छलनि जे रूढ़िक विरोध मे उतरय पड़लनि आ हुनका देशक सरकार एहि चूड़ान्त देश-प्रेमी सुजेता कें देश-निकाला देलक। क्यो बुझनिहार एहि बात कें बुझि सकैत छथि जे मिथिला-मैथिलीक बहुतो रास बात सभ कें एते विरोध, एते प्रतिरोध हम सभ किए करै छी ! एहि दुआरे करै छी जे मिथिला-मैथिली सँ हमरा बहुत प्रेम अछि !

एहि ठाम विनय के कविता-कला पर किछुओ बात नहि करी तँ कदाचित कुपुत्र लागत। मुदा, हुनकर कला की थिक? कविता मे कोनो कला नहि, कलाबाजी नहि - यैह विनय के कविता-कला थिक। कविता मे जे अपन आन्तरिक लय होइत छैक, जकरा कारणें कविता आ गद्य कें अलग-अलग चीन्हल जा सकैए - बस ततबे टा कला हुनका चाही बाकी जे हुनका लेल सर्वोपरि महत्वपूर्ण छनि, से थिक - ओ बात, ओ मुद्दा, ओ मर्म - जाहि पर ओ कविता लिखैत छथि। जीवकान्त आ फुलानन्द मिश्रक काव्य-परम्परा मे गणि कऽ कदाचित विनय के कविता कें बेसी नीक जकाँ बुझल जा सकैए।

कविता-संग्रहक प्रकाशन पर हम अपन एहि अनुज कें हृदय सँ बधाइ दै छियनि।

आनन्द विद्यार्थी
अररिया
21.3.2015

OPPO F7

विनय भूषण तैथिलीक परिचित आ पाठित काव्य [illegible] खोज' हुनक महत्त्वपूर्ण कविताक संकलन थिक। बुझल जा सकैत अछि बहुदिशि सकारात्मक मूल्यबोधक नकारात्मक एहि सामाजिक समय सकारात्मक जीवन-प्रसंगक इच्छा व्यक्तित्व के 'एबनॉर्मल' बना दैत छैक, कि कहै छै जे बिन नाकबलाक गाम मे नाकबला नाम्हू ! विनय भूषणक कवि 'ओ एबनॉर्मल अछि' मे कविस्वप्न आ सामाजिक यथार्थक संघातक बीच निकलल विद्रूपता हुनक कवि व्यक्तित्व एहि काव्य संकलनक मुख्य चेतना रूप मे पढ़ल जा सकैत अछि। 'उजरा परवाक खोज' अपन सांकेतिकता शांतिक आंहि द्वीपक संभावनाक खोज अछि जतए सामाजिक-वैयक्तिक अंतर्विरोध अपन अधिकतम न्यूनांक पर अवस्थित भऽ जीवन के मनोरम बनबा अवकाश रहैत छै। 'नोर आ पियास' क संवाद मे ओझरायल प्रतिबंधी समय विकट व्यधाक कविता मे अवतरण कोशी-कमला-बलानक नीर-प्रवाही चेतना संग पूरैत नीर के नोर बनि जयबाक प्रक्रियाक साक्षी बनि जाइत अछि। 'कठिन समय' मे कविता अपन आंतिरक निवेदन मे छोड़ि जाइत अछि एक छटपटाइत प्रश्न। प्रश्न कि, 'अहीं कहु भाई/हम कोना हँसब' ! समय कठि एहन जे कवि के कविता लिखऽ मे लाज होइत छैक, मुदा बिंडबना ई कि ई लाज अपना के उजागर कविते मे करैत छै। कविता लिखबाक अर्थ पुछैत कवि जीवनक कोमल प्रसंग मे निस्संगक घमासान अछि, एक निरव कोलाहल जन्म ! जी, निरवता समाजक आँगन मे आ कोलाहल कविक अंतर्मन मे ! एहि निरव कोलाहल मे 'कविता आत्मा मे नहि नुकाइत अछि', ओह आ 'कविताक दोकान' बहुत त्रासद, एहन 'उनटा बसात' मे कविता लिखनाइ मुश्किल जत मुक्तिक प्रकाशमय संभावनाक तलाश मे संभव होइत कविता मे कविता सँ मुक्तिक अन्हारक हाहाकार मे समाहित पत्नीक रेड-एलर्ट आ ध्वनित 'माँक ब्रह्मवाक्य' क बीच भरोसा ई जे सबहिक बीच ई बोध जे 'हमर कविता/शेष नञि भेल अछि'।

विनय भूषणक काव्य पोथी, 'उजरा परवाक खोज' मैथिली कविताक एक उपलब्धि भऽ सकैत छै, मुदा ई 'खोज' तखने सार्थक आ कि संभव जखन एहि मे समाजक संजोगक अवसर हम रचि सकी। एहि भरोसक सँ अछि अहाँक हाथ मे 'उजरा परवाक खोज'।

- प्रफुल्ल कोलख्यान

OPPO F7

कविक मन्तव्य

कविताक संदर्भ मे हमर ई धारणा अछि जे ई प्रतिवादक एकटा सशक्त माध्यम अछि। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व मे जखन कखनो कोनो आपत्तिजनक घटना घटैत अछि आ हम ओहि सँ आहत होइ छी तखन अपन वेदना आ आक्रोश के कविता मे अभिव्यक्त करै छी। अन्याय आ अव्यवस्थाक विरुद्ध जे कोनो भाव व विचार हमर मस्तिष्क मे जनमैत अछि सेह कविताक स्वरूप लऽ लैत अछि। कविता जे जीवन सँ सम्बन्धित हो तँ ओ कोनो रूप लऽ सकैत अछि। कखनहुँ-कखनहुँ तँ ओ सपाट बयानी जकाँ लगैत अछि, मुदा सभटा सपाट बयान कविता नहि होइत अछि ओहि मे जीवन व विचारक छंद संगुफित रहैत अछि। कखनहुँ-कखनहुँ कविता नाराक शक्ल लऽ लैत अछि, कारण सही नाराक सम्बन्ध जीवन सँ अछि। कविता विचारपरक सेहो भऽ सकैत अछि कारण विचारक सम्बन्ध सेहो जीवन सँ अछि।

छन्दमुक्त आ छन्दयुक्त कविताक बीचक भेद सदिखन चर्चा मे रहैत अछि। छन्दयुक्त कविता सुन्दर भऽ सकैत अछि, मुदा आवश्यकता नञि अछि जे ओ कविता समाज सँ सरोकार रखैत हो। जखन ओहि कविता मे सामाजिक सरोकार नहि हो तखन तँ ओ अनुपयोगी साबित होयत। बहुत रास सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक समस्या एहन अछि, जकरा छन्द मे अभिव्यक्त नहि कयल जा सकैत अछि। छन्द युक्त व छन्दवद्धता सँ हमर तात्पर्य तुकवन्दी सँ अछि। एहना स्थिति मे छन्दमुक्त कविताक रचना आवश्यक भऽ जाइत अछि। हमरा बुझाइत अछि एहि हेतु हमर कविता छन्दमुक्त अछि। छन्दमुक्त कविता आ गद्य मे मुख्य अन्तर ई अछि जे कविता मे प्रवाह आवश्यक अछि। इयेह प्रवाह छन्दमुक्त कविता कँ गद्य सँ अलग करैत अछि। कविता मे जे प्रवाह आबैत अछि ओकर कारण एकर अप्रत्यक्ष छन्द अछि।

हमर कविताक मुख्य तत्व विचार अछि। विचारहीन कविता किन्नहु कविता नहि भऽ सकैत अछि। मस्तिष्क मे जखन वैचारिकता नहि रहत तँ ओ हृदयक भाव कँ ग्रहण नहि कऽ सकत। समाज मे अपन विचार कँ अभिव्यक्त करबाक लेल काव्य रचना आवश्यक अछि। तेँ हम अपन कविता कँ विचारवादी कविता सँ अभिभूत करऽ चाहब। हमरे नहि हमरा संग रचना प्रारंभ करयवला अधिकांश कविक कविता विचारवादी कविताक श्रेणी मे राखल जा सकैत अछि।

नब्बे के दशक मे जे किछु कवि सभ चर्चित भेलाह ओकर कारण रचना

OPPO F7

प्रकाशकीय

क्षेत्र में पदार्पण कर रहल अछि।

करत।

जयन्ती

पूर्णिमा

OPPO F7

मिझाऽ दियो

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

छोड़ि दियो मित्र
[illegible]
एकर पहाड़ बनबाक कहानी
[illegible]
एकर लावा मे
मिट्टीपलिन भऽ जयनैक
मानवक अस्तित्व
बाँचि जेबाक अह
पहाडक शाश जकां
अपन माथ ऊँच करबाक अह।

एकर लावा से
[illegible]
ठाढ़ भऽ पाओत मात्र
एकटा ज्वालामुखी पहाड
[illegible]
मिझाऽ दियौक
एहि बारुदक ढेरी कें।

[illegible]

एकर छाउर में
दौड़ि रहल अछि दानव

[illegible]

एकर छाउर में
दौड़ि रहल अछि लोक
चम सफेदपोश लोक
एहि छाउर में
देखाइत अछि
मनुक्खक अधजरू काया
चिचियाउ रहल अछि लोक
एकर आगि में
जरि रहल अछि
हरियर-हरियर गाछ
एकर आगि में

[illegible]

सभे कहै छी मित्र
एकर छाउर में
अँपा गेल अछि
इज्जतक शिकार माय
इज्जतक शिकार बहिन।

एकर अर्थ कि

एकर अर्थ में
धधकि रहल अछि असंख्य माय
ओहि ताप कानि रहल अछि पुत्र
एकर आगि में
धधकि रहल अछि पुत्र
आहि ताप कानि रहल अछि माय
एकर आगि में
धधकि रहल अछि पनि
एकर बगल में पत्नी
फारि रहल अछि लहठी
असंख्य पत्नी
पोछि रहल अछि सिन्दुर
जनि पूछू आब आओर
मने कहै छी भाय
चन्द सफेदपोश लोक
सकि रहल छथि हाथ
एहि बारुदक ढेरी कें
मिझाइ दियौ।

•••

ओ देखि सकय

[illegible]

[illegible]

आ एखनामेल अछि
झरण आ निहारेन अछि
चारू कात गुलक हरियरी
झाबनक फुहार में
नहाइत-पाथरक आइन धानक गाछ
आकरा नीक लगेत अछि
[illegible]
आकरा नीक लगेत अछि
हरियर जाजीम सन पसरल
नान्हि-नान्हि गड्ढमक गाछ
आकरा नीक लगेत अछि
सोन सन चमकैत
[illegible]

आ एखनामेल अछि
[illegible]
मजूर कें देखब
नीक लगेत अछि
आकरा ललचावेत अछि
मक्कक धनशीशाक गंध।

आ एखनामेल अछि
[illegible]
बकार लगेत अछि आकरा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कविताक प्रार्थना

हे कवि !
अहाँ हमरा जुनि बजाउ
शराबक दुर्गन्ध-माझ

टूटैत रहैत छी आनन्द
नखन हमरा जुनि बजाउ
हमरा जुनि बजाउ

हम किन्नहु नहि उतरब
अहाँक कलमक मोसि मे
हम किन्नहु नहि उतरब
अहाँक डायरी मे
ना धरि जा धरि अहाँ
बुझब हमरा
अपन फेशन छुच्छे फैशन

• • •

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

तरुआरि

(2)

हमर आत्मिक आग
दबाऽ रहल अछि
असंख्य मट्ठा
मट्ठो मे जकड़ल अछि
हमर हर्ष-गिर्द

विदेशी पठाऽ रहल अछि
गुलामीक लेल
मधुर बान्हल तरुआरि

मनक्खेना

साहित्यक गर्दनि कें
छोपि लेबाक लेल

धरनीक गर्भ मे जयबाक

कोनो, छिड़ा आ ढेरी मे
बिहनि सदिखन

अपन छानी मे
बिहनि सदिखन
बनऽ चाहेत अछि गाछ

कानो सुरति मे

बिहनि सदिखन

गिरहत ओकरा
टाभि देथि खेत मे

बिहनि कें पता अछि
धरनीक गर्भ मे

ओ अपन नोर सँ
बहाबऽ चाहैत अछि अपन दुःख
आ गंजि लेत अछि अपन नाम
अपन आँखिक कटोरी मे
ओकरा किछु नहि गहराइत अछि
आत्महत्या काटैत अछि
आ कानि नहि पबैत अछि
ओकर पैर पर लागल अछि जाली
आँखि पर लागल अछि प्रतिबंध।

●●●

नोर आ पियास

हमरा नाङ नोर पियास लागल अछि
हम पियास सँ बेकल छी
भाई अहाँक सुन्दर सुझाव
हमरा नाङ अभाव लागल अछि
भाई अहाँ देखि रहल छी
हमर आँखि सँ झहरैत
नोरक निर्झर
अथ आत्मविश्वासक संग हमरा
कऽ रहल छी आश्वस्त जे
हमर पियास मिझयबाक लेल
हमर आँखि सँ झहरैत नोर
पर्याप्त अछि
भाई अहाँ मरुभूमि-सम्पन्न रहितो
विवेकशून्य छी
अहाँके नोरक स्वाद
शायद पता नहि अछि
नोर पीबाक वस्तु नहि अछि
नोर गहन अछि ननऽरहन।

भाई ! अहाँ के पता होयबाक चाही
नोर बहेबाक वस्तु छियैक
नोर छियैक काशी-कमला-बलान
नोर पीबाक वस्तु नहि छियैक भाई
नोर छियैक दुःखक समुद्र
नोर पीबाक वस्तु नहि छियैक भाई
नोर छियैक इन्कलाबक फरमान
नोर काशी-कमला-बलानक बाढ़ि छियैक
इ बहाऽ देत अन्यायक अट्टालिका के

इ समाउ लत शापणक पहाड़ के
पेट मे
भाई ! हमर आंखिक नोर
बनत एक दिन एकटा धधकत ज्वाला
जे जड़ाउ कें छाउर कऽ देत
अन्यायक एहि जंगल कें।

●●●

दस टा आंगुर दस टा ओठी

हुनका दुई गोट हाथ अछि
[illegible] गोट आंगुर अछि
हुनक दुई गोट हाथ आ दस टा आंगुर
[illegible] खास बात नहि अछि भाइ
खास बात ई अछि जे
हुनका पता अछि
गरीब क गुन गाबाक तकनीक
खास बात ई अछि जे
हुनका पता अछि
गरीब क बरबक बनबाक तकनीक
खास बात ई अछि जे हुनका पता अछि
तमाम अनैतिकता कें
नैतिक कर्तव्य म बदलबाक तकनीक
खास बात ई अछि जे
निर्दयता आ व्यभिचार हुनक आभूषण अछि।

आजुक अर्थतंत्री व्यवस्था मे
व्यवहारिक बनबाक लेल
समस्त लोक
हुनका सं लऽ रहल अछि प्रशिक्षण
शायद हम भटकि रहल छी
अपन कविता मे
एहि कविताक मादे हमरा
कहबाक छल एक खास बात
खास बात अछि दुई गोट हाथ
खास बात अछि दस गोट आंगुर
हुनक दुई गोट हाथ आ दस गोट आंगुर
खास अछि
ई खास अछि एहि लेल जे
हुनक दस गोट आंगुर मे
हीरा जरल दस गोट सानाक आंठी अछि।

●●●

एहि कठिन समय मे

एहि विकट परिस्थिति मे
अहाँ हमरा सं
कऽ रहल छी विनम्र निवेदन
जे हम हँसी
हमर हँसी मे अहाँ
ताकि रहल छी ठहक्का
हमरा लग हँसब असभ्य अछि भाइ
अहाँ कहु भाई
हम कोना हँसब
अपना अन्दर भऽ गलल मानवीय मूल्य।
सामाजिकताक नाटकक पटाक्षेप
भऽ रहल अछि झमटगर
लाफ सिर्फ रहल अछि अपन अस्तित्व
बुरबक बनि गेलाह गोबांचोब
बनल जा रहल अछि पंजीवादी नाकन
नगन जगन अर भौतिकक मदभ म
साचबाक रागन हाथ मपना
अहुं नहि हँसि सकब भाई
अपन मशिणक लग साचन-साचन
अहुं हमरे जकाँ सदिखन
कठमठाइन ठिठिवाइन रहब।

●●●

चिड़ै आ कवि

चिड़ै उड़ैत अछि आकाश मे
अपन सम्पूर्ण शक्ति सँ
[illegible]
चिड़ै चरोक खोज मे
धरि-धरि दिन
उड़ैत रहैत अछि आकाश मे
आहिना जना कोनो कवि
कल्पनाक दुनिया मे
नाकत रहैत अछि
अपन कविताक लेल
एकटा बिम्ब
बिम्ब संधानल आ साधंक
[illegible]
[illegible]

◆ ० ◆

परिवर्तन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

•••

हमरा लाज होइत अछि

तखन हमरा लाज होइत अछि
शब्दक भ्रम-जाल बुनब हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
अपन पहिचान निखारब हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
अपन अहंकारक इजहार हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
पुरस्कारक तिकरम हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
अध्यक्षक आसन हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
नेताजीक भाषण हो
तखन हमरा लाज होइत अछि
मंत्रीजीक शासन हो
तखन माफ करब भाई
कविता लिखबा मे
हमरा लाज होइत अछि।

•••

स्वप्नक हत्या

जखन फकरो स्वप्नक
भऽ जाइत छैक हत्या
तखन ओकर छाती मे
भऽ जाइत छैक घाऽ
जहिना-जहिना
बीतैत जाइत छैक क्षण
गहगर भऽ जाइत छैक घाऽ।

•••

गिद्धक कायान्तरण

गिद्ध झाड़ूदार चिड़े छल
जखन कोनो माल जाल मरि जाइत छलैक
आकि ठाम पहुँचि जाइत छल गिद्ध
मालक लहासक खाल कें
जखन खलि लेत छल चमार
तखन पहुँचि जाइत छल गिद्ध
साफ कऽ देत छलैक धरती।

आइ गिद्ध/लऽ लेलक अछि मनुक्खक शक्ल
आ/मरल मालक मर्री नञि खाइत अछि
ओ खाइत अछि / जीयत मनुक्खक मास्
आ साफ नञि करैत अछि धरती
ओ खा ऽ के करैत अछि निघस
घिनाऽ गेल अछि धरती
गन्हाऽ रहल अछि धरती
ओ एहि दुर्गंध कें
सुंघैत अछि इत्र जकाँ
अगराएल-इतराएल ठाढ़ अछि धरती पर
निर्लज्जक प्रतिरूप जकाँ।

●●●

आदमी आ शब्द

आदमी शब्द होइत अछि
शब्द होइत अछि आदमी
मुदा आदमी आ शब्दक बीच सम्बन्ध
हमर आत्मा क चाहा दन अछि
जनब दर्शाइत अछि आदमी
शब्द मे इन्सान अछि
मुदा/आदमी
स्वयं मे बेइमान अछि।

•••

विनिमय

[illegible]
अहाँ जे रचि रहल छी
कविता, कथा आ उपन्यास
[illegible]
अहाँ ई रचना अपना लग राखि
की करब भाइ
[illegible]
भूखल-पियासल सदिखन
लिखैत रहैत छी साहित्य
अपन समस्त सुख-सेहन्ता के
पता छन छिऐ अपन समाज पर

हम अपनो मोन मारि कऽ पढ़ै छी एहन
जन साधारण दय महान साहित्य टाका
अहाँ अपन समस्त रचना
दऽ दियऽ हमरा
समस्त दुःख दूर भऽ जायत भाइ
लिअऽ ई टाकाक गड्डी
दऽ दियऽ अपन रचना।

०००

कविता आत्मा मे नञि नुकाइत अछि

कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता सरेआम
बाट आ चौबाट पर।
चिकरैत अछि
गरजैत अछि
करैत रहैत अछि संदिग्धन
प्रतिवादक इजहार।

कविता लड़ैत रहैत अछि संदिग्धन
परम्परागत संस्कार स्वरूप में
कविता करैत रहैत अछि प्रशस्त
प्रगतिशीलताक चकरगर बाट
कविता धधकैत मशाल सन
परिवर्तनक अग्रदूत जकाँ
आगाँ बढ़ैत रहैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता बाहिक आतंक ओ
सुखारक पीड़ा सँ
कखनहुँ नञि हारैत अछि त्रस्त
कविता अपन घातक समस्त बाधा सँ
लड़ैत अपनहि
तय, करैत अछि
आगाँ बढ़बाक बाट
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम

दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता कखनहुँ
हेराइत नहि अछि जानवर देगा सं
महगी सँ कखनहुँ
हारैत नहि अछि कविता
पेट मे धधकैत जठराग्नि लग
पस्त नहि होइत अछि कविता
कविता जीवक असीम आशाक संग
एहि सँ लड़ैत अछि
कविता कखनहुँ
नहि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता हरवाहक लाङलि कें
कविता कादोमिसबाहकक कादोमि क
धूर-धूसरित मजदूरोक हाथ क
खुरपी आ हँसु कें
दऽ दैत अछि मशालक शक्ल
कविता कखनहुँ
नहि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता शोषण सँ
लैत अछि सीधा मोर्चा
कविता शोषण कें कऽ दैत अछि
नेस्त-नाबूद
कविता शोषिताक आह कें
दऽ दैत अछि इन्कलाबक शक्ल
कविता/रोद मे जरैत

आ ठंड में जमैत
मेहनतियाक खून कें
दऽ देत अछि आगिक शक्ल
कविता कखनहुँ
नहि नहाइत अछि स्नान में
कविता सरेआम
दाड़ैत अछि
बाट आ चाबाट पर।

कविता / घास छिलैत काल
खेत कमबैत काल
गुरमी-शीतक चानन जल
मजदूरीक चूड़ा गुनगुनाबैत
मुँहक गुनगुनाहटि कें
दऽ देत अछि इन्कलाबक स्वर
कविता भगवानक मुँह सँ उतरैत
भगति आ परातीक टोन कें
दऽ देत अछि इन्कलाबक शक्ल
कविता गाम चलाबैत काल
मजदूरीक हाट में अन्हारक गीत कें
जीतक धरधराहटि कें
बनाऽ देत अछि क्रांतिगीत
कविता नागे पर्वत पाथर
बनाऽ देत अछि परिवर्तनक आगि
कविता कखनहुँ
नहि नहाइत अछि स्नान में
कविता
नवका भोरक प्रतीक्षा में
लोहित गंगा अरुणाचल घाट
कविता हिमालय नहि छूबि सकैत अछि
कविता निर्भीकता सँ
बढ़ैत रहैत अछि आगाँ
आगाँ-आगाँ आओर आगाँ।

●●●

परम्परा

हे परम्परा
अहाँ प्रणम्य छी
मानव अहाँ पर गर्व करैत छी
जाहि सँ
छीटि सकैत अछि
अपसंस्कृतिक अन्हार
अहाँ सन्हजनपथक कऽ सकैत छी प्रशस्त
प्रगतिशीलताक बाट
मुदा / ई की भऽ रहल अछि
अहाँ बनल जा रहल छी रुढ़ि
हम सभ कऽ रहल छी संगोर
जे हम सभ कऽ सकी
अहाक सहिक अट्टालिका क
नेस्त नाबूद।

●●●

कविताक दोकान

हुनका कारि-कारि टाका छन्हि
आलीशान फ्लेट छन्हि
हुनक गत्र-गत्र मे
भरल अछि लवालव खून
फूलल अछि गाल आ तोंद
कनोन सभ मे लगन अछि स्मार्ट
अनमन राजकुमार सन
पहिरि लेने छथि
चमचम करैत फोटाक्रोमिक शीशा वला
दामी फ्रेमवला चश्मा।

फ्लैटक प्रांगण मे
घूमैत छथि सदिखन
चाबक चुस्कीक संग
देखैत छथि टी.वी.
टी.वी. पर आबैत छथि
दीन-हीन काया वला कवि
जठराग्नि मे झड़कल शब्द मे
गोंजन हाइत अछि टी.वी. स्क्रीन
उदघाषक बनबन अछि प्रशासक पल।

फ्लट मे बैसल ओ देहगर लोक
बहराइत अछि घर सँ
ड्राइवर गैरेज सँ
बहार करैत अछि चमचमाइत फिएट
ओ जाइत छथि बाजार
बाआइन छथि दहनाइन छथि
बाजार सँ बाजार
दोकान सँ दोकान
मॉल सँ मॉल
ताकैत छथि कविताक दोकान

एखन धरि हुनका
नहि भेटल छनि
कविताक दोकान।
ओना ओ आश्वस्त छथि
[illegible]
आ अवश्य नहि लगाह बाजार
कविताक बाजार
ओ तकि लेताह मॉल
मॉल मे कविताक दोकान

●●●

पता नञि

अहाँ हमर प्राण हरि लेब
पता अछि हमरा
अहाँ हमर [illegible] चोरा लेब
पता अछि हमरा
अहाँ हमर [illegible] हरि लेब
पता अछि हमरा।

मुदा ! अहाँक एहि कुकृत्य सँ
हमर कोनो हानि नहि होयत
पता अछि हमरा
अहाँक एहि कुकृत्य सँ
हमर कविताक चाल बाधा नञि होयत
पता अछि हमरा।

पता नहि कियेक
हमर आँखिक आगू
पसरि गेल अछि
चिन्ताक घोर अन्हरिया
जे एहि कुकृत्य सँ
अहाँक हानि होयत
छुच्छे हानि।

●●●

षड्यंत्र

ओ अहींक मित्र छल
बुझल अछि हमरा
आब आ हमर मित्र अछि
गाँज लिअऽ एकरा।

अहाँ हुनका लगीच रहै छी
नीक नजरि लगए हमरा
ओ अहीं जकाँ निश्छल छथि
बुझल अछि हमरा।

ओ हमर मित्र छथि
हमरे सन बनलाह
छल-छ-य आ साम-दण्डक
अट्टालिका ओ गढ़लाह।

अहाँ बेर-बेर
हुनका लग जाइ छी
निश्छलताक मंत्र सँ हुनका
अभिमंत्रित करै छी
सत्ते कहै छी
अहींक ई सुचालि
हमरा मिसियो भरि
नीक नजरि लगेए।

एकटा बात बुझि लिअऽ
जे हमर मित्र बनेत अछि
स ब हमर मित्र नहि भऽ सकए
हे ! देखि रहल छी
अहाँ बड़ जिदियाह छी
अहाँ हमरा बेर-बेर कऽ रहल छी

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अपन कद के नम्हर करबाक लेल
अहाँ वयम के चिन्ता करै छी
एकर चिन्ता जनि करु
अहाँ लग टाका अछि आ
अहाँ दू दिनक नेना छी
ई टाका अहाँ के बुजुर्ग बनाऽ देत
अम्मी बच्चाक बूट
अहाँ आगू नना भऽ जयताह
आ ओ
अहाँक चरण-स्पर्श करताह
टाकाक गड्डी पर ठाढ़ भऽ जाउ
अहाँक कद आपनो नम्हर भऽ जायत
ध्यान रहय
टाकाक गड्डी
बस ऊँच रहबाक चाही

पता हमरा में थु कमए अछि
एत एमना एक करऽ पड़त अछि
एकर चिन्ता जनि करू
एकर चिन्ता त आ हरन अछि
जकरा अपन एदक चिन्ता नहि अछि
आ न क्लण्वेंग्राधिकारम्न मा फलेषु कदाचन
पर विश्वास करैत अछि
अहाँ नं शासण दमन आ अत्याचारक नकेबाद
नीक जकाँ जानै छी
नयन काटक चिन्ता करबाक की जरूरति
अग अपन एदक लल बस चिन्तित छी
नउन टाकाक गड़ी के ऊंच करैत जाऊ
ऊँच-ऊँच आओर ऊँच
एवरेस्टो सँ बेसी ऊँच।

●●●

सहजताक मर्म

ओ सहज अछि
चाम खीचि लिअऽ हुनक
चाम खीचि लिअऽ हुनक एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
तोड़ि दियो ओकर टाँग
तोड़ि दिया आकर टाग एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
निकालि लिअऽ हुनक आँखि
निकालि लिअऽ हुनक आँखि एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
काटि लिअऽ हुनक जीह
काटि लिअऽ हुनक जीह एहि लेल जे
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
काटि लिअऽ हुनक आंगुर
काटि लिअऽ हुनक आगुर एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
छीनि लिअऽ हुनक कलम
छीनि लिअऽ हुनक कमल एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
सबक सुमस्त कविता में
रहि लिअऽ अपन नाम
सबक कविता में रहि लिअऽ अपन नाम
एहि लेल
जे ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
त्यागि सकत अछि अपन गहनो
दामगर कपड़ा दए हरबाह बनब
पहिन लिअऽ हमर सभ गहनो
एहि लेल
जे ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
अपन पहिचानक चिन्ता
नहि छन्हि हुनका
हुनक पहिचान कें
माटि मे मिलाऽ दिअनि एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

●●●

हे कलमकार !
अहां बड़ कऽ हमर बलात्कार
इतिहासो में सदिखन
हमर उपयोग होइत रहल अछि
आब हम ठानि लेने छी
अहांक लेल हम
किञ्चहु नञि बनब
फेशनक कोनो वस्तु।

हम ई महसूसि रहल छी जे
अहाँ हमरा बजाबे छी
मदिराक दुर्गन्धक मध्य
अहां कऽ द छी हमरा नग्न
हमर गाल पर
अहाँ लेल रह छी चुम्मा बेर-बेर
अहाँ सदिखन हमरा
भरैत रहे छी आलिंगन।

हे कलमकार !
अहां के पता होयबाक चाही
जे हमर इच्छा अछि
जे हम / बनि सकी मशाल
धधकि सकी हम
अहांक अन्हरुक दुश्चरित्रता क
कऽ सकी सुड्डाह।

हे कलमकार !
हम ई नहि चाहैत छी जे
बनि सकी
निरालाक कैपिटलिस्टक
कोटक गुलाब

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

•••

निर्लज्ज

ओ निर्लज्ज अछि
निर्लज्जता अछि आकर परिचय
एहि शहर मे ओकरा
ठग-बेइमान आ भ्रष्टाचारीक
भेटल अछि उपाधि।

ओ बेरोजगार नहि अछि
ओ लाचार नहि अछि
ओ अछि कामचोर
अपन चेहरा पर
चढ़ाऽ लेने अछि
छद्म विद्वताक मुखौटा

ओ दिन भरि
करैत रहैत अछि
लक्ष्मीगृहक पूजन-अर्चन
ओ बौआइत रहैत अछि
अर्थ-अर्जनक धंधाक लेल
गृहय-ओहय टहलाइत रहैत अछि।

●●●

आवागमन

[illegible]
[illegible]
[illegible]
आकाशक रक्ताभ अलग्न
अभरऽ लगैत अछि
चमकैत पितरिया थारा सन
गोल मटाल प्रकाश पुंज
[illegible]
निद्रा कें अनिद्रा म बदलैत
मरणा प्रसन्न करैत अछि भयंकर दाग

[illegible]
[illegible]
परयत्न अछि भाजन
मस्तायल गिरथाक आत्मा म
करैत अछि उत्साहक सचार
करैत अछि धरती पर
मात्र मनक्खक लेल नहि
समस्त जड़-चेतनक लल
इजोतक बखा
इजोत एसगर रहल अछि धरती पर
भार म राधर, दुधर म माटि
फेर राति विलाक उपरान्त
पन: भार म ग्रालासय दिवाकर
दमकल पहचि जाइत अछि
विशाल अम्बर पर
अनवरत चलत रहल अछि याग
भार म दुधर-दुधर म साझ

•••

सहानुभूतिक गणित

हमर धमन आखि आ चाकटल गाल देखि
आकर आखि म ग्रहण रहल अछि
घृणाक घिनाओन दृष्टि
ओकरा इ विश्वास भऽ गल अछि
हम लाचार आ बेचारा छी
ओ ठगि-फुसला कें
धनार्जन करबाक तकनीक मे
छथि बेस निपुण
ओकरा इ विश्वास भऽ गल अछि
हमरा लग कविता छोड़ि
आओर किछु नजि अछि
ओकरा इ विश्वास भऽ गल अछि
हमरा सँ नहि भेटि सकतनि
एक्कोटा थुर्री पाइ।

ओ लाचार भऽ
असमंजस मे
हमरा सँ आँखि चोरेबाक
कऽ रहल अछि प्रयास
ओ बाजैत अछि हमरा लेल
एकटा सहानुभूति शब्द
आह ! अहाँ बड़ तकलीफ मे छी
ओकर घृणासिक्त आँखि
आ छद्म सहानुभूति सँ
धधकऽ लगल अछि हमर हृदय
हम पछताइत छी
आ सुनैत रहैत छी
कृत्रिम भाव सँ सम्पृक्त
छद्म सहानुभूतिक शब्द

ओ एतय पर नहि रुकैत अछि

आ एतेन अहि कारण
हमर जानाराक मारण
जाबत हम रहत जियक
आपन सांचरिगक बात
आ गड़ल अर्थ परशान
आबर चहरा क पढ़ल जा सकेत
आसानी सं
आ प्रसन्न अर्थ अन्तर म
हमरा एकटा जाल म फसल
माछ बजन अहि
चआबेत अहि
मगरमच्छक नार
अन्त म करेत अहि आग्रह
अहाँ हमर नाफर बनि जाऊ
अहाक कल्याण मऽ जायत।

•••

सत्य अछि प्रेम

मीता !
अहाँ बहि रहल छी
हमर नश मे रक्त जकाँ।

मीता !
हमर धमनी मे अहीं
कोशीक बाढ़ि जकाँ
उमरि रहल छी बेरि-बेरि।

हमर हृदयक धड़कन मे
अहीं धड़कैत छी मीता
स्वप्न मे अहीं
उतरे छी हमर छाती मे
हिमालयक उत्तुंग शिखर सं
उतरैत गंगा जकाँ।

मीता !
अपन व्यस्तता मे
अहाँ कें हम
कहाँ बिसरि पावे छी।

व्यस्तता मे मीता !
आओर बेसी
मोन पड़े छी अहाँ।

मीता !
अहाँक यादिक बरछी
हमर हृदय कें
कऽ देनय अछि लहुलोहान।

मीता !
सिहकैत वसात मे

[illegible]

[illegible]

हमर छाती पर
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अहीं छी हमर जीवन
अहीं छी हमर धड़कन।

मोना !
अहींक याद
[illegible]
हमर भग्न जाल के
सलहश - कुसुमा
नल - दमयन्ती
होर - राझा
आओर कनक
जकर प्रेम गाथा के

मानेत छलहुँ फानि
आई हमर हृदय
दुत्कारि रहल अछि
एहि भ्रम बोध कें।

मीता !
सत्य अछि प्रेम
सत्य छी अहाँ
सत्य अछि अहाँक ओ यादि
जे बेरि-बेरि
उतरि रहल अछि हमर ठानी म
हिमालयक उत्तुंग शिखर स
उतरैत गंगा जकाँ।

●●●

गिद्ध

हमर आयुक आग
नाउ अछि एकटा विशाल वस्तु।
एकर अमरत्व गान
पसरल अछि सह दिस
ई शरि पृथिवि लवण अछि
हरियर रंगक पात।

एहि गाछ पर
बसल अछि एकटा गिद्ध
गिद्ध क चाम नहि अछि
चाम सन भऽ गेल अछि निपत्ता
एहि गाछ क नहि अछि पात्रि।

चाम, लाज आ पत्रि बिहीन ई गिद्ध
जुग्म रहल अछि चारू कात
एकटा दू टा आँखि अछि
एकटा नाक आऊ
लोल लऽ लवण अछि
बर्नासो दीनक शक्ल
एहि गिद्धक मंह सं
लटकि रहल अछि
पाच हाथक जीह
अपन उदर मे
सेति के राखनय अछि
बहत्तर हाथक अँतरी।

कखनहुँ काल लोक कें
भऽ जाइत अछि ई भ्रम
ओ लऽ लैत अछि निर्णय
ई साँचे मनुक्ख छी
कारण मनुक्खे सन
लागि रहल अछि एकर काँनि।

ओना लोक

एहि बात सँ, भऽ जाइत अछि आश्वस्त
जे ई समस्या नहि अछि
मनुक्ख किछु नहि
अपन स्वार्थ पूर्ति हित
कऽ सकै ये
अनकर अस्तित्व हरण
ई तँ लाभ-लोभक लेल
पाँति सऽ य निरंकुशक ग्रस्त
अपन शान बघारबाक लेल
ओ समस्त मनुक्ख कैं
बनाऽ सकै ये लहास
इ मन / लाल-चास आ पाँखि बिहीन
एकटा गिद्ध अछि।

पुनः लोक
निहारऽ लगल विशाल वट वृक्ष
वटवृक्ष
मल्टीनेशनल कम्पनीक बोझा सँ
अँकुरल एकटा गाछ
गाछ छन जा रहल अछि आकाश
गाछ मे बहराय लागल अछि
असंख्य पोनकी
पोनकी छितरि कैं
भरि जा रहल अछि गाल-गाल पान।

वटवृक्ष पर बैसल गिद्ध
अपन बत्तीसो दाँत निपोरने
हँसि रहल अछि
एकटा घिनाओन हँसी
पसरि रहल अछि
एकटा घिनाओन खिलखिलाहटि
सम्पूर्ण वातावरण मे
पसरि रहल अछि जहर।

गामक कवि मित्रक नाम एकटा कविता

भाइ ! गाँह मनमोहन समाज मे
चाननक भागप भाग मे
मदहना निर्धन समाज मे
जनम मान पल्लव आउ गाम
गामक सार्थक
तरुन नवीनाय
स्मरण आबि जाइ छी अहा
गाम लगा ता अहाक मदर्भ मे
अहा लिखल एक कविता
अवस्स लिखल एक कविता
कागजाक लल
नाकल हेब लिखब अवस्स
दुआरि पर बान्हल धस
गारी मे बान्हल बरद
आ डिकरेल गाय पर
कविता लिखबाक लेल
सोचल हेब अवस्स।

भाइ ! अहां कविता लिखेल हेब
अवस्से लिखेल हेब कविता
खम्हारक मेह पर बेसल फुही
ओहि म बान्हल धनसीसा पर
लत्त-लुब करेत आकर लोल पर
अटकल होयत अहाँक आँखि
मेहक चारु कात घुमैत बरद
आ पाँजक पाँज धान के
धांगैत ओकर पयर पर
कविता लिखबाक लेल
सोचैत होयब अवस्से।

टी.वी. पर देखाइत होयनेक

अमेरिकाक वर्ल्ड ट्रेड सेंटर
आन हाइन टूड-स्तूप
मस्जिद सिद्ध आ साइबेरिक गणेश मंत्र
एतह नाकल हायब अवश्य
मदर पावरक स्टेचर्स आ
एकतामय भाईचारक परिवेश पर सान्त
धर्मक हिमायत नहा समाइत एक अद्वैत्य
मदर एवर इनवार पर्यावरण शांति मंत्र
ऐतिहासिक ढंग सँ गढ़ाइत
एहन अगणित आ नयनाभिराम कलाकृति
आ एकर परिवार कलरव परिपूर्ण वातावरण म मानव
अहाँ साँप-छुछुन्दारक फेर म
पड़ि जाइत होयब अवस्से
सिंगर अफगानी जननाक अग्निवाण जन
अहाँक हृदय म जगह हायत
आ अहाँ व्यस्त हायब
एकरा पहन हँ हिंसार गड़बाक लल
जाहि सँ भऽ जाइ ध्वस्त
मदर पावर आ अनकरबादक विशाल अट्टालिका
सँ हम साँचि रहल छी
अप्पन कविता लिखबाक जागार म
लागल होयब अवस्से।

अप्पन मस्त भावन क ध्वस्त करबाक साजिश
आ पाशविकताक दानव नीति
अमेरिकाक स्टेनलिक कुचक्र
आ भारत सरकारक नपुंसकता
पत्रकारक असुरक्षा / आ
जननाक तटस्थता
अपन क ध्वस्त करैत होयत अवश्य
आ अहाँ
एकटा कविता लिखबाक लल

सोचैत होयब अवस्से।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
स्वादि-स्वादि पीबैत अछि
आ होइत अछि प्रसन्न
गाम बदलल जा रहल अछि शहर मे
शहर बदलल जा रहल अछि जंगल मे
जंगल मे घूमैत अछि
आनकक शोर आ इषाक भाँटिया
एहि संदर्भ मे सोचैत अहाँ
फेर घरि जाइत होयब दलान दिस
निहारऽ लगैत होयब चापाल कें
जाहि ठाम हाइत हो हसो-दड्डा
बरन मान मटाव आ बरन राग-भाव
थम्ह पुनः निहारऽ लगैत होयब बथान दिस
जाहि ठाम बरद-भस आ गाय
अपन मालिक क दीख
डालबत अछि सींग
डोलबैत अछि नांगरि
देहक गत्र-गत्र मे
अभरऽ लगैत अछि
प्रसन्नताक महासमुद्र।

भड़ अहा पुनः सनऽ लगैत हब
मड़र पर कौंव-कौंव करैत कौआक स्वर
अहाँ दखऽ लगैत हब खम्हार
दूर-दूर धरि पसरल खेत
खेत म हरियर हरियर गाछ
गामक कान मे बाध
बाधक कान मे धार

धारक ओहि पार मे बाध
दूर-दूर धरि पसरल खरहार
आमक गाछी आ खेरबत्री
अहाँ सोचऽ लगैत होयब सते
एहि ठाम जीवैत अछि
उजरा परवा
नहि कतरल गल अछि पांखि
मिठास सँ भरल गुटर-गूँक मन्द स्वर
पसरि रहल अछि गाम मे
आ अहाँ सोचैत होयब
लिखल जाई एकटा कविता
गाम नजि भऽ जाई बाजार
ताहि लेल अहाँ रचैत हेब
एकटा सम्पूर्ण कविता
बाजत होयब असंख्य वक्तव्य
गढ़ैत हेब
बाजारवादी दानवक हत्याक लेल
असंख्य हथियार
रंगैत होयब असंख्य पोस्टर
पोस्टर पर लिखैत होयब नारा
आ भाई
अहाँ रचैत हेब कविता
अवस्से लिखैत होयब
असंख्य कविता।

●●●

थपड़ी मारऽ

मूस टूटल
थपड़ी मारऽ
कार्मनिस्ट के गट टूटले ये
थपड़ी [illegible]
पंजाबवाद के गाटो लाल
थपड़ी मारऽ
दुश्मन जगह
जहर आव लन
थपड़ी मारऽ
भाग जगन
शोषक दल के
थपड़ी मारऽ
गाधाचाचक बुद्धि फल
थपड़ी मारऽ
नाक्सन प्राइज भल सोकाज
थपड़ी मारऽ
लेनिन के बुधिवारो फेल
थपड़ी मारऽ
मरकस बाबा गेल निरुतर
थपड़ी मारऽ
चीन तें अपन फेर मे लागल
थपड़ी मारऽ
[illegible]
थपड़ी मारऽ
[illegible]
थपड़ी मारऽ
अर्थशास्त्र बाजारक चलते
थपड़ी मारऽ
स्टालिन के गंजन भेल
थपड़ी मारऽ
[illegible]

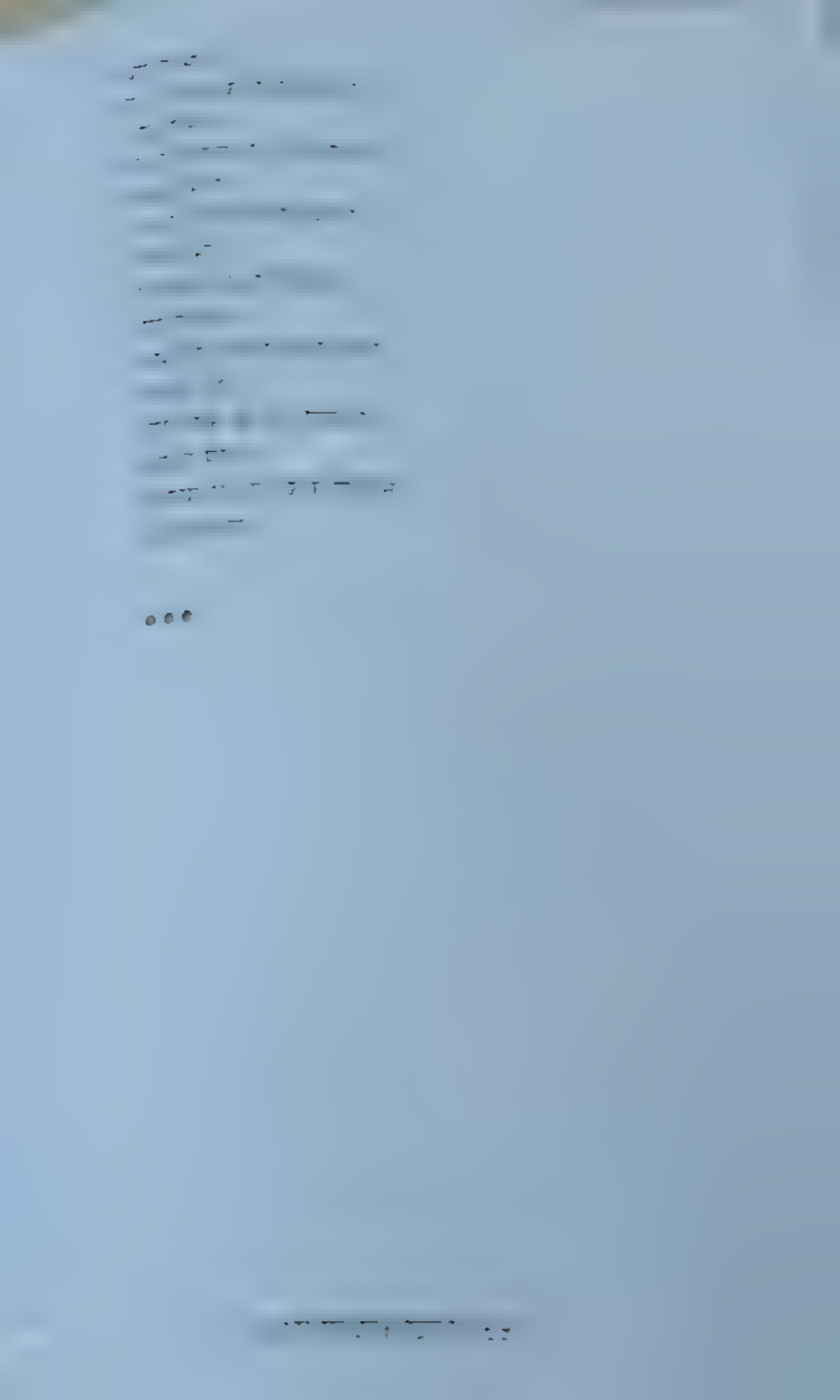

उजरा परवाक खोज

उजरा परवाक उज्जर रंग
आ ओकर निश्छलता कें
देखबाक लल
आकुल अछि हमर नेत्र
गुटर-गूक मधुर स्वर क
सुनबाक लेल
बेकल अछि हमर कान।

उजरा पाँखिक फरफराहटिक स्वर क
सुनबाक लेल
कहिया सँ लगौने छी आश।

उजरा परवा कहाँ अछि हमर देश मे
कहाँ देखि पबै छी
उजरा परवा कें
एहि ग्लोब पर?

क्षत-विक्षत भेल
पिरथीक विशाल वक्ष
कुहरि रहल अछि
कइयेक शताब्दी सँ।

कइयेक शताब्दी सँ
इतिहासक विशाल आगन म
गिद्धक हेँज
आपस मे
कऽ रहल अछि कटाउंझ।

कहिये सं तें,
अनेकानेक आक्रामक राक्षसक

हाइत रहल आगमन
हमर विशाल पिरथी पर।

इतिहासक पन्ना
कहिये सँ
भऽ रहल अछि रक्त-रंजित।

ओना बूझल अछि हमरा
उजरा परवा के
नहि सोहाइत अछि
शोणित सँ पोतल
पिरथीक विशाल वक्ष।

उजरा परवा
कहिये सँ
ओना रहल अछि
देखऽ लेल
हरियर कचोर पिरथी
आ
मांस-मज्जा सँ पुष्ट
प्रत्येक मनुक्खक काया।

कखनहुँ बहराइत अछि
ग्राम्य मर्दाजन अमग्य हाथ
पूब सँ पश्चिम दिस
आ पश्चिम सँ पूब दिस
ग्राम्य मर्दाजन ई हाथ
ताकि रहल अछि
निर्दोष, निष्पाप आ महनतियाक
पवित्र काया।

कान्हियें नै
वर्ल्ड ट्रेड सेंटर क
ध्वस्त कऽ देनय छल
? अस्त्रायुधयुक्त राक्षस
आ फेर
मचि गेल छल
ज्ञानक अ साम्राज्य
अफगानी धरती पर
निरीह मानवता के
ध्वस्त करबाक साजिश
भऽ गेल छल कामयाब।
उजरा परबा
एहि दानवक
हृदयक क्रुरताक रग क
दया आ करुणाक रंग सँ
रंगऽ चाहैत छल।

मदा ज्ञानाज्ञानक मद मे मातल
सुपर पावर
इतिहासक गति कें
अपन गतिक हिस्सा
बनबऽ मे व्यस्त छल।

विशाल पिरथी कें
धर्म आ अर्थक
विशाल छत्रक नीचा
ठाढ़ करबाक
महत्वाकांक्षाक मद मे मातल
सुपर पावर
उजरा परबाक पाँखि कतरऽ प

भऽ गल अछि सफल।

[illegible]
विश्व-विजयक पताक
फहरबऽ चाहैत अछि
सम्पूर्ण ग्लोब पर।

आबो हमरा आजा अछि
हम अवश्य सुनि पायब
उजरा परबाक
गुटर-गूँ क मधुर स्वर
आ अवश्य देख पायब
उजरा परबाक उज्जर रंग

• • •

अहाँ हमर भाई छी।

भाइ!
हमर मान नहि मानल अछि जे
अहाँ लग नहि अछि दुःखक महासमुद्र
कियेक तँ
अहाँक गामक सीमान पर
उदास ठाढ़ अछि आरि पाकड़ि पर
ओहरि करैत अछि
हजार-हजार कचवचिया

आ ओकर झोहरि
अहांक भीतर एक-एक क पेंसि गेन अछि
आ अहाँ चाहै छी जे
बिरो उड़ा कें लऽ जाई
अहाँक सोच आ परिकल्पना
अहाँक गढ़ि आकांक्षाक सपना म
नुकायल अछि हमर सभटा मुक्ति-परिकल्पना
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमर मोन नञि मानैत अछि जे
अहाँ लग नहि अछि कानो सहन्नाक पहाड़
कियेक तँ अहाँ
अपन सभटा रंग-रभस आ खटरास क
दमऽ चाहत छी आजन्म वनवास
मुदा भऽ रहल अछि हमरा मन्दर/जे
कानो जनमि सकल अहांक हृदय म
सभटा रंग-रभस आ खटरास
कियेक तं आहिना अहाँ
थाम्हि लेनय होयब कलम
कविता लिखबाक
करऽ लागल होयब सुर-सार
बिलाऽ गेल होयत
सभटा रंग-रभस आ खटरास
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !

[illegible]

भाई !
हमर चोकावैत अछि अवस्से
अहाँक कायरता
जे / अहाँक गन्तव्य
मात्र इजोत धरि अछि
आ अन्हार मे चलवाक जोखिम सं
कतराइ रहल छी अहाँ

आना
पच-पगबक बिटपजाल मे
[illegible]
अहर्निश परानिय गबय
जलबागक अभाबा मे
धाय पाँबि उपकल रहेये
अहाँक मान
[illegible]
अहाँक कुरहरि
पाँबि रहल अछि
लोहारक भाथीक बसात
आ भऽ रहल अछि लाल टह-टह
न हमर मान मे जगन अछि आशा
ज अहाँ, लड़ब अन्हारक बिरुद्ध अग्रम
किबक तं अहा हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
अहाँ के कम्प्यूटर स बहराइत
आग्नेयक रंग-बिरंगक फान्ट
करैत अछि त्रस्त
सदा शीत-ताप नियंत्रित कक्ष म
बसल काना मठ-साहूकारक मगन बिचार
पबन हा अहाँक कबिता मे अपन स्थान
मे मान नहि मानैत अछि
आ सदेहक सियाह अन्हार म
ओनाइत मनुक्खक मोनक असगुन सपना
अहाँ कें करैत हो त्रस्त
म मान नहि मानत अछि
किबक तं अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री

अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।
भाई !
अहाँक कविताक स्वर
अहाक कान म नहि टकराइत होयत
स हमर मान नहि मानत अछि
अहाँक सपनाक दुनिया मे
हरियर हरियर असंख्य सब्ज बाग हो
आ ओहि ठाम जनमैत हो
मक्तिक चेतना
स हमर मान नहि मानत अछि
आना इ अनग बात अछि भाइ जे
हमर कविताक स्वर
अहाँक कानक बगल सँ
गुजरि जाइत होयत
आ अहाँ रहैत हेब बखबर
तखन एहनो भऽ सकैत अछि
अहाँ पर विश्वास करैत हमर मोन
कोना अमर्यादित मस्तिष्कक प्रतिफलन होय।
तखन हमर मान न इहर करैत अछि जे
जखन हमर मान
भऽ जायत संतुलित
तँ मानि जायत जे
अहाँ लग / नजि अछि
कोनो समुद्र
नजि अछि कोनो पहाड़
नजि अछि कोनो महानगर
तखन हमर मोन
कहियो नजि मानत जे
अहाँ लग अछि कोना महासमर।

●●●

इंकल

दरियाइ बाड़ा जकाँ
अपन विशाल मुँह खोल
पश्चिमी सीमान पर
ठाढ़ अछि
एकटा विशाल राक्षस।

ऑक्टापस जकाँ इ राक्षस
अपन शक्तिक धाम जमनय
अपन विशाल पीठ पसारनय
प्रशान्त महासागरक कछेर पर
मुंह पटकि रहल अछि
इंकल सन राक्षस।

विशाल मगरमच्छ सन / इ इंकल
गंगाक कछेर पर
रावीक कछेर पर
अपन मन मे मनग
फ्रांसियाहा नारक सग
खौफनाक जबड़ा के खोल
सभटा जीव कें
खुअबाक लेल
टेंग जकाँ ओघरायल अछि
इ विशालकाय राक्षस।

•••

हर्षहन्ता

भयानक धरती पर
विश्वास खिलखिलाइत
एकटा सुन्दर सपना
जीवनयात्राक सीमा पर
नव-नव गान अछि अपन ठाम
हानल अछि मनोरम हरियर गाम
निरावल आठ
सभ्य श्यामला धरती पर
पसरल हरियर जाजिम
मानक जमीन पर
जनमि जाइत अछि
आह्लादक सुन्दर गाछ

नवजनमि एकटा विशाल सिंह
अपन शक्तिक सधानक संग
दहाड़ल पहुँचि जाइत अछि वन
खढ़ियाक अरण्य रुदन क
अनसुनी करैत ई सिंह
एकरा अपन जबरा मे
समाउ लैत अछि
आ छीनि लैत अछि
खढ़ियाक चिर-प्रतीक्षित मुस्कान।

●●●

सम्पर्क

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
अहा आन किनका सं सम्पर्क नहि करु
हम अहाँ कें बना देब
राहुल, राजकमल आ यात्री
मैथिलीशरण, अज्ञेय आ निराला
कालीदास आ शेक्सपीयर
विद्यापति आ टैगोर
अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मदा शर्त अछि
अहा आन किनका सं सम्पर्क नहि करु।

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
लिखि दिअौ एकटा इतिहास
इतिहास मे
हमर नाम आ कृतित्वक
करु चर्चा आ प्रशसा
एक शर्त आओर अछि
आओर किनकों चर्च नहि हुअय
मिसियो भरि नहि
चर्चा हुअय किनका आनक
अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
अहाँ क बना देब
हरिऔध आ रामविलास शर्मा
एजरा पाउंड आ होमर
अहा हमर टा सं सम्पर्क करु
किनको आन सँ
मिसियो भरि नहि करु सम्पर्क।

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु

मुदा शर्त अछि
अहाँ आन किनको स सम्पर्क नहि करु
अहा आन्हर नहि छी
स हमरा पता अछि नीक जकाँ
मुदा अपना आप क अहा
भानि लिअ आन्हर
ई हमर आदेश अछि
विश्वास करु
हम अहाँ कें
बनाऽ देब
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व रमानाथ झा
नामवर सिंह व माहन भारद्वाज
हजारी प्रसाद द्विवदी व कल्यानन्द मिश्र
मामदव व मायानन्द मिश्र
मनाप्रकाश व सभाषचन्द्र यादव
नागानन्द विवागी व दवशकर नवीन
मुदा शर्त अछि
अहाँ हमरा सं सम्पर्क करु
मात्र हमर टा सं करु सम्पर्क
आन किनको सँ
मिमियो भरि नहि करु सम्पर्क।

●●●

टेलीफोन पर माँ

सुरुज बहुत देर पहिनहि
पश्चिमक क्षितिज के
कऽ गेल अछि पार
आकाशक रंग
भऽ गेल अछि कारी सियाह
आनक अमावस्याक सियाह राति मे
चान मरा चाँदनी गाम अछि अन्यत्र।

एखनहि हमर हृदयाकाश पर
धर्माक गेल अछि एकटा पनमर चान
हमर हृदय मे
नहि अछि अमावस्याक सियाह राति।

टेलिफोनक रिसीवर
हमर कान मे लागल अछि
हमर कान सुनि रहल अछि
माँक कलपैत स्वर
माँ पूछैत छथि बेरि-बेरि
बाऊ ! खाना खेलय?

पुनः हमर हृदय सँ
निकलय लगैत अछि पनमर चान
हमर हृदयाकाश पर सेहो
पसरय लगैत अछि
अमावस्याक सियाह अन्हार।

मा भाँपि लैत छथि हमर आवाज
नै निश्चित नहि खेलय ए
झूठ नहि बाज
हमर सप्पत

[illegible]

हम कहेन ठिअक
माँ एखन एबे कोनियेक
पुनः एकटा झूठ
पुनः आबेन अछि प्रश्न
एतेक देरी किएक भेलौ ! बाउ !
हम कहेन ठिअक
काज मे लागल छलहुँ।

माँ बेकल भऽ कहेन छथि
किछुओ पहिने खा ले बाबा
हम निरुत्तर भऽ जाइ छी
झूठ पर झूठ तुच्छे झूठ
माँ सँ झूठ
पुनः हमर आँखिक आगू
देखाइन अछि अन्हार।

हम अपन माँ के
[illegible]
जे माँ
[illegible]
हम लिखि रहल छी कविता
अपन भूखक लेल नहि
असंख्य भूखल लोकक
अन्तिम रक्षाक लेल
[illegible]
सार्थक कविता।

•••

एक गोट गुर्भाचल्लक वक्तव्य

भाई !
आई अहांक ठार पर
[illegible]
की बात छिये भाइ
[illegible]
निरना [illegible]
अहांक आवाज में
[illegible]
अहाँ अबिते कहैत छलहुं
अपन दारिद्र-गाथा
समस्याक बाढ़ि
अहांक मुह स
निकलैत छल अहर्निश।

भाई !
हमरा भटैत छल अवसर
चुआवैत छलहुं देखाओ आ नोर
मुंह पर आनि लैत छलहुं
विषादक चित्र पट।

भाई !
मने अहाँ
[illegible]
किछु देरक लेल
बिला जाइत छल अहांक विषाद
[illegible]
आई नहि, काल्हि आउ
कहैत छलहुं आहि क्षण
अहांक लाचार आ निश्छल मोन
हमरा पर करैत छल विश्वास
[illegible]
एहि मध्य
भरि जाइत छल

[illegible]
हमर अपन शुभचिन्तकक भाव
रहत छल अक्षुण्ण।

आई,
अहाँक चेहरा पर
प्रसन्नताक भाव देखि
हम अतिचिन्तित छी
अहाँक जीवनक मरुथल
भऽ गेल अछि हरियर
अहाँक जीवन मे
उतरि गेल अछि
सुख शान्ति आ चैन

हम सदिखन
देखऽ चाहैत छलहुँ
अहाँक जीवन मे
बेचैनीक महासमुद्र
आब अहाँक जीवन
पहाड़ नहि अछि
अहाँक जीवन मे
नहि अछि
मिसियो भरि
समस्याक मकड़जाल
से हम सोचै छी
आब कोना देखाऽ पायब हम
अहाँ कें सहानुभूति
कोना मुफ्त परामर्शक
कऽ पायब इजहार
कोना चलत हमर
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कविताक दर्द

कविताक दर्द
आहि लगातर्थिन कवि क का पता?
त कविता के
मान: सरोवरक प्रसन्न अहंस हा
कविताक दर्द त
ओहि कवि सँ पुछ
जे कविता कें
मान: सरोवरक प्रसन्न अहंस हा
आ जिनकर आतरक कवि
कविताक शब्द मे जोयंत हो।

●●●

सहस्त्राब्दीक शेष : एकटा प्रेम कविता

(1)

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष म
हम सोचि रहल छी जे
अहाँक नाम
रचि सकी एकटा कविता
कविता
प्रेम कविता।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी
एक बेर अवस्से
कऽ सकी स्पर्श
अहाँक कोमल देह।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी जे
अहाँक नाम
लिखि सकी एकटा पत्र
पत्र
प्रेम पत्र।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
सोचि रहल छी जे
पूछि सकी अहाँ सँ
अहाँक सेहन्ता।

मीता !

एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
सोचि रहल छी जे
पुछि सकी अहाँ सँ
हम अपन काव्यक अर्थ।

मीना !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी जे
अहाँ कें कहि दी सभटा बात
बात
हृदय मे नुकायल
अव्यक्त आ अस्पष्ट
कहि दी एक-एक बात
सभटा सुच्चा बात।

(2)
मीना !
आंना पता अछि हमरा
अहाँक रोम-रोम
नागफेनीक काँट जकाँ
भऽ जायत ठाढ़
अपन भविष्यक प्रति अहाँ
साचऽ लागब असगुन
ओहना
सदिखन हमर हेरायल रहब
अपना-आप मे
अहाँ कें
देत अछि दारुण पीड़ा
आ हम
अहाँक भाग्यवादी साचक
करै छी उपयोग
बड़ु चतुराइ सँ

अहाँ के पोलहा दे छी जे
समय एतक
मन कि ठीक भऽ जेतैक।

ओना मीता !
हमरा पता अछि
हमर दिन कें
हमर दुर्भाग्य
नञि केनय अछि वक्र।

हम चाह छी
आकाश सभक भऽ जाइ
हमरा नञि चाही
रक्त सँ भरल कोनो घैल
न हम
रक्तजीवीक विरुद्ध
ठानि देनय छी एकटा युद्ध।

हमर दिन वक्र नञि अछि
सेहो मानै छी हम
आना हमर साझ दिनक निर्माण मे
अहाँक असंख्य सेहन्ताक
हाइल छक हत्या
सेहो मानै छी हम।

(3)
मीता !
मल्टीनेशनल कम्पनीक
रंगीन लेटर पैड पर
अहाँक कोमल हाथ सँ
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हमर नाम लिखल ई प्रेम-पत्र

हमर हाथ मे अछि।

पत्रक शब्दक उच्चारण करैत
अहींक मधुर स्वर
हमर कान मे [illegible]
प्रत्यक अक्षरक पाँति
[illegible]
शब्द मे परमत्व [illegible]
[illegible]
आह्लादक आभा मे [illegible]
अहींक चेहरा झलकैत अछि।

सदा मोना !
अहींक आदि आशीर्वाद
करैत छी हम सम्मान
जाहि मे अछी
हमरा स्वाभ्यक प्रति
साकांक्ष रहबाक
कोनय छी निहोरा
[illegible]
कहाँ नमोंच अछि हमरा
जे एहि महत्वाकांक्ष [illegible]
भरि मान रखबाक
कोनय छी आगर।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गरियाबऽ मे
व्यस्त अछि हमर कलम
आबऽबला सहस्त्राब्दीक
डेराओन भविष्यक प्रति
साकांक्ष छी हम
ओना हम तँयो
सोचि रहल छी
सहस्त्राब्दीक शेष सँ पूर्व
अहाँक नाम
अवस्से लिखब
एकटा प्रेम पत्र
ओना
एखन
हमर कविता शेष नहि भेल अछि।

●●●

उनटा बसात

भाई !
[illegible]
[illegible]
इतिहासक अमरत्व पत्रा पर
[illegible]
व बदलैत बसातक रुख।

भाई !
सुनयना छियक
जहिया रावणक मस्तिष्क पर
घमण्ड बना लनक अपन घर
तऽ ओकर विद्वता
विलीन होइत गेल
अहंकारक अन्हार मे
बिसरि गेल इजोतक अर्थ
बौआइत रहल अन्हार मे।

महादेवक भक्त रहितो
कामक आगि मे
धधकऽ लगलैक ओकर मोन
मर्यादाक सीमा क [illegible]
चलि गेल एकटा जंगल
जंगल अन्यायक जंगल
जंगल अन्हारक जंगल
शोषण आ दमनक जंगल
ओ बौआय लागल निःधोख
अन्हार मे हेमंत आंहिना
जेना सुग्गर
विष्ठा के स्वादैत
होइत अछि अति प्रसन्न।

आउ !
अहां के पता लगबाक चाही
हवाक रुख बदलबाक पहिने
अहां अपन के नहि बिसरबाक चाही
ने त समय बदलला अपन रुप रंग
आ राग
सत्यक नव नागरिक मग
बदलि देतय छल हवाक रुख
एकरा यादि पाड़ैत
हमरा बुझाइत अछि
एकरा समय आवश्यक अछि
हवाक रुख बदलबाक लेल

•••

चेतौनी

मीना !
गरि बीच हम
सोलह हजार एक अप्सरा मध्य
कऽ रहल छी विहार
प्रत्येक अप्सराक
नूतन गुलाबी गाल पर
चुम्बन लय
हम बिसरि जाइ छी
भूख आ पिपासा।

मीना !
हमर अन्तर मे जनमैत
कामेच्छा
अतृप्त काम-कामना
हमरा बिसरा दैत अछि
भोरक आगमनक आभास
नहि देखि पबै छी
भोरका आकाश पर पसरल
कोनो रक्ताभ सूर्य।

मीना !
सोलह हजार एक अप्सराक
मधुर बोल सुनैत-सुनैत कान
बिसरि जाइत अछि सुनब
कोयलीक स्वरक मिठास।

मीना !
सोलह हजार एक अप्सराक मध्य
करैत विहार सँ
हमर मोन मे

जनमऽ लागल अछि
नव आनीक गाछ
हिसरि जाइ छी सबहक जोगान
आपना बना
आना भसिया बा हरवाह
भोर दिनक अथक परिश्रम
आ साँझुकाक दुलहार क
बिसरि जाइत अछि
टाट म बजल घर म
बिछावाह सिमकेत दलोन मे
अपन जीवनक अथकाक
मर क बिसरन
शायद आकरो
हराइत अछि
साँझ हजार एक अन्धरा
एक दामराक पाँज म
आइरावल आ सहो
बिसरि जाइत अछि
भारका आकाश पर पसरल
सूर्यक रक्ताभ रंग
आह्लादक वसंतक मध्य मे मातल
काना गाछक डारि पर बसल
कोयलीक स्वरक मिठास
शायद आकरो जीवन मे
उतरि जाइत अछि बरआनी।

मीता !
एहि बीच
अमरुख चुगलखोरक मध्य फँसल छी हम
शायद आ

अहाँ कें दऽ दिअय
एहन दारुण संवाद
जाहि सँ
अहाँ भऽ जाइ विदग्ध
[illegible]
[illegible]

मीता !
अहाँ सहज छी
अति सहज
मीता !
अहाँ निश्छल छी
अत्यंत निश्छल
मीता !
अहाँ भावुक छी
अति भावुक
अहाँक लेल शायद
एहन दारुण संवाद
भऽ जायत असह्य
आ अहाँ लऽ लेब निर्णय
कोनो असगुन निर्णय
अहाँ कऽ बेसब
कोनो अनहोनी काज।

मीता !
अहाँक एहन निर्णय
एहन अनहोनी काज
हमर जीवन क' कऽ दन बंजर
शायद हमरो खातिर
भऽ जायत असह्य हमर जीवन

हमहुं लऽ लेब निर्णय
कोनो असगुन निर्णय
हमहुं कऽ बरब
कोनो अनहोनी काज
कारण अहांक प्रस्थानक संगे
हमर जीवन सं
बिलाऽ जायत
सोलह हजार एक अप्सरा।

मीता !
हम सत्ते कऽ रहल छी विहार
सोलह हजार एक अप्सरा मध्य
मीता !
कोना बीति जाइत छैक
शतकोटि साल
शतकोटि वसंतक संग
असंख्य कोयलीक
मधुर स्वरक संग
असंख्य रंग-बिरंगक किरणक संग
हम बूझि नहि पबै छी।

मीता !
विश्वास करु
अहीं छी हमर जीवन
सोलह हजार एक अप्सरा
अहीं छी
अहीं छी हमर कविताक
असंख्य अप्सरा
अहीं छी हमर जीवनक
असंख्य वसंत
अहीं छी हमर कानक रंग

कोयलीक मधुर स्वर
अरुण ठाँ हमर अनुपम आत्मिक धन
असख्य बालारुण रक्ताभ सूर्य।

मीना !
अहाँ प्रत्येक वर्ष
जाई छी नैहर
गाम ठाँ मामा-चकवा
भगला क कर छी सगुन
हमरा विश्वास अछि
अहाँ आब
प्रत्येक क्षण करब रक्षा सगुन
सभटा चुगलखोर कें।

●●●

चक्रआर्नाक गणित

एकटा विशाल भवन
भवनक भवन म एकटा विशाल कक्ष
कक्ष म लागल हजारो घड़ी
मजायल एकटा टेबुल
कॉल बेलक टनटनी सँ
नियंत्रित होइत
मध्य रि घर म एकटा चमगादड़
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहि ठाम
चक्रआर्नाक गण चढ़ाइत अछि

एकटा विशाल काया
आँखि पर चमचमाइत चश्मा
तनल भृकुटी
सभटा सहयोगी कर्मचारी पर
जमबैत अपन रोब
जनताक जेबी नोचैत
फुलबैत अपन तोंद
कोनो ए.सी.कार मे बैसल
भागल नगर-डगर आ महानगरक सड़क
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहि ठाम
चक्रआर्नाक गण चढ़ाइत अछि।

एकटा पंचतारा होटल
होटल मे एकटा घर
घर मे एकटा छोड़ी
टेबुल पर सजायल
शराबक बोतल
एक-एक घोंट शराब सँ

लाल होइत आँखि
निकालनाक सीमा पार करत
जखन किओ
जमबेत हो ठोर
ओहि छौड़ीक गाल पर
भरेत हो आलिंगन
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहिठाम
बबुआनीक गंध बुझाइत अछि।

अहाँ भले
कानो भाग्य मानेत बबुआन क
शापकक पानि म राखि दी
ई अहाँक मोन अछि
अहाँ भले
अपन अस्तित्वक संघर्ष मे व्यस्त
कोनो बबुआन कें
वश्यागामी कहि लिअऽ
अहाँक मोन अछि
अहा कानो हर जानेत बबुआन के
मार्बल कऽ दी क्रूर आ निष्ठुर
अहाँक मोन अछि।

हमरा बुझाइत अछि
आजुक बाजारु दुनिया मे
जतय सहानुभूति नञि अछि
भरि गेल अछि संवेदना
जीवित अछि छुच्छे टाका
साम-दाम-दण्ड भेद
ओतय बबुआनीक लेल

जरुरी अछि
पैघ पद पर नोकरी
ढाकीक ढाकी टाका
घोटाला, धोखा आ फरेब
शासण, दमन आ छद्म समाज सेवा
आ बहुआयामी अट्टालिकाक लल
किछु रंगदार
किछु सफेद पोश,
छद्म प्रतिष्ठा, अहंकार
कोटि-कोटि टाका।

●●●

गुरु-पर्व

ओ दिन
हमरा नीक जकाँ मोन अछि
जाहि दिन हम
ताकि रहल छलहुँ
कोनो प्रेरणाश्रोत
कोनो गुरुवर
कोनो अभिभावक।

हमरा हृदय में
कहियो नञि
अंकुरायल छल
एक्कोटा संदेहक पँपो
गाम मे।

गाम मे
कहियो नञि
अभरल छल हमर हृदय मे
एक्को रत्ती संदेहक भाव
सत्ते
गाम मे भेटैत छल
हरियर कचोर पिरथी
हँसैत गाछ
सत्ते
सहानुभूतिक गंगा
बहैत छल गाम मे
सहानुभूतिक धार मे
नहाइत
हमर मोन सदिखन
रहैत छल आह्लादित।

गाम सँ महानगरक प्रस्थान
अपन परिजन-पुरजन सं आशक्ति
माँक आँचर सँ निकसैत

वात्सल्यक गंगा
पिताक कोर मे हँसैत हमर मोन
[illegible]
पत्नीक चेहरा पर अभरत
प्रसन्नताक भाव
समस्त आह्लादक भाव सँ
मुक्त होइत हमर मोन
[illegible]
गाम सँ परदेशक लेल प्रस्थान
परदेश दिस खींचैत हमरा ट्रेन
सत्ते कटाह लगैत छल।

गुरुवरक खोजक हमर जिद्द
कोनो प्रेरणाश्रोत के टोहैत
हमर मोन
[illegible]
हमर कल्पना
हमरा मनानगर मे चान्हि चलैत छल
आ हम चित्रामक [illegible]
ताकैत रहलहुँ एकटा गुरुदेव
सुच्चा गुरु
हम ताकैत रहलहुँ
एकटा प्रेरणाश्रोत
एकटा अभिभावक
सुच्चा अभिभावक।

जीवनक शान्तिक लेल
जरुरी अछि
एकटा गुरुवर
सुच्चा गुरुवर
जिनका सँ भेंटि सकय
[illegible]
कोनो बाट
हम बेलल्ला भेल

ओनाइन रहलहुँ
एकटा गुरुक लल
सच्चा गुरुक लल
जीवनक शान्तिक लल
जरुरी अछि एकटा अभिभावक
सच्चा अभिभावक
जिनका कहि सकी
अपन मानक सभटा बात
जीवन शान्तिक लेल
जरुरी अछि
एकटा इतिहास पुरुष
सच्चा इतिहास पुरुष
जकरा मे भेटि सकय
एहि बहुराष्ट्रीय दुनियाक लेल
प्रेरणाक कानो धार।

एहि महानगर मे
आजक [illegible]
हमरा कऽ देत अछि त्रस्त
अपसंस्कृतिक बाढ़ि
हमरा कऽ देत अछि विचलित
एहि महानगर मे हम
नाकि लेला
असंख्य गुरुदेव
असंख्य अभिभावक
असंख्य प्रेरणास्रोत।

कोना त्रस्त जकाँ
जगत हमर अस्तित्वक
होमय लागल उपयोग
नग्न
हमर हृदय मे
जनमय लागल
असंख्य संदेहक गाछ

संदेह के विश्वास मे
कऽ सकी प्रवर्तन
ताहि लेल हम
मनबैत रहलहुँ गुरुपर्व
गुरु पर्व
एकटा इतिहास गढ़बाक लेल
मनबैत रहलहुँ गुरुपर्व
गुरु सेवा हमर धर्म अछि
मानैत रहल हमर आत्मा
मुदा ओहि दिन
चोकि गेलहुँ हम
भऽ गेल छलहुँ
किंकर्त्तव्यविमूढ़ हम
जखन हमर गुरुपर्व
कोनो तिकरमक
भऽ गेल छल शिकार
हमर मोन मे जनमैत
सेवा भाव कें
नेस्त-नाबूद करबाक
होइत रहल षड़यंत्र।

हमर गुरुदेव
ओहि दिन
पियास सँ छलाह बेकल
आ हम
जेठक रौद मे
नाकन रहलहुँ पानि अपन गुरुक लेल
हम भऽ गेल छलहुँ सफल
जखन भेटि गेल पानि
हमर गुरुवरक लेल
मुदा जखन गुरुदेव
भऽ गेल छलाह धधरा
हमर हाथ मे पानि देखि
आ ओ पानि

उर्झलि लेलाह
अपन पायर घर
आ फेर केलनि संकेत
जे हम फेर आनि मकी
[illegible]
एक लोटा शीतल जल
आहि रोद मे टटाइत
फेर आनलहुँ पानि
मुदा ता धरि
हमर आनल पानि
अनुपयुक्त भऽ गेल छल
[illegible]
छीटैत रहलहुँ पानि
मुदा गुरुदेव
सुति रहलाह दीर्घनिद्रा मे।

हमर भीतर जनमैत
गुरुसेवा-भाव
नजि लऽ सकल आकार
हम बेलल्ला भेल
भऽ गेलहुँ विक्षिप्त
सोचैत रहलहुँ अहर्निश
आब फेर कोनो दिन
मनाऽ सकब गुरु पर्व
सुच्चा पर्व
मुदा गुरुदेव
सुति रहलाह दीर्घनिद्रा मे
हमर प्रार्थना भऽ गल अनुपयुक्त
हम नहि मना सकलहुँ
एकटा गुरुपर्व।

•••

कंचनमालाक कविता पढ़ैत

कंचनमाला !
आई हमरा बुझाइत अछि
मने / अहाँक संग मे
हमर मुट्ठी सँ झहरल सिंदूर
सफल भऽ गेल अछि।

शायद अहाँ
बहुत पहिनहि
कविताक दुनिया मे
कऽ गेल छलहुँ प्रवेश
सम्पूर्ण आकाश
अहाँ के अपन बुझाइत अछि
ई अहाँक
निश्छलता आ संघर्षशीलताक
प्रमाण अछि।

कागत पर पसरल
समस्त कविता
अहाँ कें अपन बुझाइत अछि
ई अहाँक
काव्य-प्रतिभा आ
[illegible]क प्रमाण अछि
अपन जीवन कें
समाजक लेल
करऽ चाहे छी समर्पित
ई अहाँक
परोपकारी चरित्रक प्रमाण अछि।

[illegible]
[illegible]
अहाँक लल

कोमल आ आशुतोष
ओतबे प्रिय अछि
[illegible]
अहाँ हमर कविता पढ़ि
ततबे आह्लादित होइ छी
जतबा हमर बाँहि मे ओझरायल
अहाक [illegible]

सत्ते कंचनमाला
अहाँक कविता
[illegible]
असीम क्षितिज धरि पसरल
विशाल पिरथी जकाँ
सत्ते अहाँक कविता
[illegible]
महासागरक अनन्त गहराइ सन [illegible]
अंतरिक्षक पारक शून्य धरि।

कंचनमाला !
सत्ते आइ हमरा बुझाइत अछि
अहाँक सींथ मे
हमर मुट्ठी सँ झहरल सिन्दूर
सफल भेल अछि।

●●●

आतंकक कारी मेघ

आतंकक इ कारी-कारी मेघ
धरणीक हरियर गाछ-बिरिछ क
नष्ट नाश करबाक साजिश मे
भऽ गेल अछि सफल।

मनुक्खक अस्तित्व पर लागल प्रश्नचिह्न
आ मानवताक विजय गाथा
पृथिवीक विशाल वक्ष क
कऽ देलय अछि कलंकित।

आतंकक चमकैत लपलपाइत
धरगर तरुआरि
मनुक्खक गर्दनि कें छोपऽ मे
व्यस्त अछि अहर्निश
कोशी मायक
बिगरल आ नमहर धारक
स्मृतिक वाड़ि मे
उपजल कऽ रहल अछि नमर मौन।

धरतीक आँचर पर पसरल
हरियर-कचोर जाजीम
जहिना नजि
सोहाइत छलन्हि
माय कोशी के
तहिना आई
नजि सोहाइत अछि
एहि राक्षस के
मानवताक हरियर-हरियर फसल।

वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर कें
ध्वस्त केनय छल

एकटा राक्षस
दानवताक रंग मे रंगल आकर आतंक
आत्मनाशिक लेल
विध्वंशक लेल छल समर्पित
ओ चानक रंग के
मलीन करबा मे व्यस्त छल
आ मरुज के आपन नखी म रंगबाक
सपना सपनाइत छल अहर्निश।

ओकरा पता छलैक
आ इतिहासक रावण, कंस, दुर्योधन
हिटलर, सिकन्दर, नमर व ब्रिटिश
बनऽ चाहत छल
आकर हृदय म बिलाऽ गेल छलैक
राम, कृष्ण, ईशा, महम्मद, बुद्ध, महावीर
वा गाँधी बनबाक सपना
ओ चाहैत छल आ चाहैत अछि
ध्वंश मात्र ध्वंश।

इरान आ कि अफगानिस्तान
काश्मीर आ कि पंजाब
संसद भवन आ कि बम्बई
गया-जहानाबाद आ कि गोधरा
सम्पूर्ण ग्लोब/भऽ रहल अछि
लहु-लोहान
सुदर दहानक चल्ली में लऽ क
अन्तरिक्ष म उड़त प्रक्षपास्त्र धरि
पसरि गेल अछि
आतंकक ई कारी-कारी मेघ
मानवताक हरियर्राक सादर्व के
नेस्त-नाबूद करबाक साजिश मे
भऽ गेल अछि सफल।
●●●

माँक ब्रह्मवाक्य

माँ ! आइ नाहर बात
ब्रह्मवाक्य जकां लगत अछि ने
ई कविता
मोरा बरबाद कऽ देत
[illegible]

ई कविता
कहां देत अछि सम्मान
[illegible]
ई कविता तं
जनमैत अछि
हमर बरबाद भेल जीवन सँ
[illegible]
सामंजस्य सँ
गढ़ाइत अछि
कविताक काया।

भले माँ तोहर कहल बात
ब्रह्मवाक्य जकां लगत अछि ने
ई कविता लागत बरबाद कऽ देत
[illegible]

●○●

आना बूझल होयत

पश्चिम क्षितिज में
साँय-साँय हवाक संग
[illegible]
पूबक क्षितिज दिस
बढ़ल आबि रहल अछि
असख्य विशालकाय गिद्ध।

गिद्ध कइयेक वर्ख सँ
मराक [illegible] रहल अछि इन्तजार
गिद्धक चोखगर टेढ़का नोंह
सभ दिन करैत रहल
मराक संगोर
आना बूझल होयत
एहि गिद्धक इतिहास
समृद्ध अछि
[illegible]
जनक इयैत गिद्ध अछि
नोंप आ बबुक सँ
निमाहल आ परमाण सभ थिक
ई गिद्ध
मंडराइत रहल अछि
मराक जोगार मे।

कान्हि सुननय छलियैक
गिद्धक सम्कृतिक विनाशक बात
ई गिद्ध
पहिरि लेनय छल कण्ठी-माला
ओढ़ि लेनय छल

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भूपर पावरक गजडाँकक जय
बलिदानी हाइन छथि आय धरक
आब इ गिद्ध
पुनः परकरा; रहत अंडे
अपन विशाल पंक्ति
पिजा; रहत अंकि लाल
नेना अपन कुर्सीक रक्षा हित
अमरत्व प्रजातंत्रीय गिद्ध
एहि गिद्धक स्वागत ओ
गुहार छथि।

•••

कविता लेखन चल रहु

ओहि दिन
भकुआइत रहा माऽ नहि छल
गाँधीक जर्मान पर
सत्य आ अहिंसाक फसनक
कोनो नामोनिशान नहि छल
अमरुद मामदाबिक गाछस
अपन चेहरा कें
बनाऽ लेनय छल
आओर बेसी डेगओन
किछुए दिन पहिले
पूर्वक क्षितिज सँ
आयल छल एकटा राक्षस दल
राक्षस दलक रक्त मे
घोरक छल निर्दयता
आ अपन नखआर आ भाला सं
मानवताक कें
कऽ रहल छल विद्ध।

तत्पश्चात दोसर राक्षस
अपन त्रिशुली आँखि सँ
नजर गराऽ लेनय छल
निमुधन जनता पर
आ सहस्त्रगना निर्दयताक संग
प्रेमक गंगा कें
कऽ देनय छल विषाक्त
मानवताक हत्या
नारीक चीर-हरण
आ गर्भ सं निकालि
कऽना चबाइत नवजात शिशुक हत्या
भारतक माथ कें
झुका देनय छल।

मानवताक हत्या
गाँहि कत्त नहि भत्त छल जे
आकरा करबाक छल
अपन-अपन धर्मक रक्षा
राक्षस आ धर्म म
कहाँ अछि सामंजस्यक संभावना
हत्याक तांडव सँ
दलमलित भऽ गेल छल
गाँधीक जमीन
दलमलित भऽ गेल छल
हमर आत्मा।

गुजरातक धरतीक पीड़ा
हमर कविता मे
लेमऽ चाहैत छल आकार
बनाऽ लेलय छलहुं हम अपन मन
बैसि गेल छलहुँ
लिखबाक लेल एकटा कविता
गढ़बाक लेल
एकटा हथियार
रचबाक लेल
एकटा सुच्चा काव्य।

तखनहि अतिचिन्तित मुद्रा मे
ठाढ़ भऽ गेलीह हमर पत्नी
सहज भावेँ
कहलीह हमर पत्नी
''बौवा बीमार छै''
हम पत्नीक चेहरा दिस
गराऽ देलहुं अपन नजरि
पत्नी छलीह चिन्तित
अति चिन्तित छलीह हमर पत्नी

हम पुनः कविता पर
भऽ गेलहु केन्द्रित
पत्नी थथकि गेलीह
बजलीह हमर पत्नी
दबाई आनवाक अछि।

हमरा लेल
असंभव छल
कविता सँ मुक्ति
तखनहि पत्नी
रेड-एलर्टक मुद्रा मे कहलीह
सावधान !
कविता लेखन बन्न करु।

●●●

अहाँ जे देखि रहल छी

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
अहाँक हृदयक आंगन मे
बनबैत होयत
निराशाक अट्टालिका
बहुत दूरहि सँ अहाँ
झाँपि लेत होयब अपन नाक।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग मे
डेग-डेग पर पसरल हड्डीक ठठरी
धरतीक आँचर पर पसरल लाल रंग
असंख्य जीवक लाशक चित्र
बनबैत होयत अहाँक हृदय मे
निराशाक अट्टालिका।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम पसरल अछि असंख्य लाश
लाश, निरीहताक प्रतिबिम्बन
लाश, इमानक हत्या
लाश, संवेदना पर कुठाराघात
लाश, संवादक अंत
लाश, नैतिकताक मृत्यु
अहाँक आँखिक आगू
पसरल अछि
लाश-लाश-छुच्छे लाश।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम मंडराऽ रहल अछि गिद्ध
गिद्ध पिजाऽ रहल अछि अपन लोल
मरीक जोगार मे गिद्ध
करतै अछि
असंख्य तकनीकक सृजन।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम, मंडराइत गिद्धक हेंज
साँय-साँय स्वरक संग
डोलबैत अपन पाँखि
नोचि रहल अछि माउस
गिद्ध कऽ रहल अछि
एकटा घिनाओन
गिद्ध संस्कृतिक सृजन।

●●●

OPPO F7

मूल नाम : बिनय भूषण ठाकुर

पिता : श्री योगेन्द्र ठाकुर

माता : श्रीमती पवित्री ठाकुर

जन्म : 06-11-1968

शिक्षा : एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड.

पता : वरहशेर, भाया : पंचगछिया

प्रखंड : सत्तर-कटैया, जिला : सहरसा-852124

मो. : 9874274019

सम्पादन : धार, जागृति, कोशी, मिथिला चेतना, सृजन सनेश, मिथिला चेम्बरक सनेश, श्री मिथिला, कतिपय स्मारिकाक सम्पादन।

वृत्ति : अध्यापन, विद्यापति विद्यामंदिर, कोलकाता

शीघ्र प्रकाश्य : जखन कविता नारा भऽ जाइत अछि *(कविता संग्रह)*, लहकैत चिनगी (मैथिली उपन्यास)

Bhorukawa Publication
Kolkata - 7

Print & Design by : Lakhanpati Jha, Kolkata, Mob. : 09748120990, 09883072050

OPPO F7